25/01/2022 B.A Subsidary Paper I

Q संयुक्त परिवार के गुण - दोष की विवेचना करें।
(Discuss the merits and demerits of Joint family.)

Ans- बहुत प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार भारतीय सामाजिक संगठन की एक प्रमुख इकाई रहा है। इसे सदैव से ही भारत में महत्व दिया गया है। इसका कारण संयुक्त परिवार से होने वाले लाभ या गुण है, जो निम्नलिखित है:-

(1) अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति में सहायक - संयुक्त परिवार द्वारा व्यक्ति की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से होती है क्योंकि चाहे जिस उम्र का हो, काम करता हो या बेरोजगार हो, कार्यकुशल हो या मूर्ख, दुर्बल हो या शक्तिशाली संयुक्त परिवार सभी की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

(2) मितव्ययी - संयुक्त परिवार में बहुत सारे व्यक्ति एक साथ मिलकर रहते हैं, जिससे भोजन, मकान, नौकर आदि की अलग-अलग व्यवस्था नहीं करनी पड़ती है। फलतः खर्च कम होता है। इसके विपरीत प्रत्येक भाई अब अलग-अलग रहता है, तो उसे भोजन, मकान, नौकर आदि की अलग-अलग व्यवस्था करनी पड़ती है। इससे खर्च अधिक होता है। इस प्रकार संयुक्त परिवार अपेक्षाकृत मितव्ययी होता है।

श्रम - विभाजन की सुविधा - संयुक्त परिवार में श्रम विभाजन की भी सुविधा पायी जाती है। परिवार के विभिन्न सदस्य भिन्न - कार्य करते हैं कुछ लोग खरीद - बिक्री में लगे रहते हैं, औरतें घर का कार्य करती हैं। इस प्रकार संयुक्त परिवार श्रम-विभाजन के सिद्धान्त पर संगठित होता है। जिससे परिवार का सभी कार्य उचित समय पर तथा उचित ढंग से होता है।

सम्पत्ति के उपविभाजन से बचाव - संयुक्त परिवार का एक प्रमुख लाभ यह है कि इसमें परिवार की भूमि छोटे - छोटे टुकड़ों में नहीं बंट पाती है। उपविभाजन तथा अपखण्डन के बहुत सारे दोष हैं, जिनका कृषि तथा किसान दोनों की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। संयुक्त परिवार से इस पर नियंत्रण रहता है।

संयुक्त परिवार के उपरोक्त गुणों के साथ - साथ इसके कुछ दोष भी हैं जो निम्नलिखित हैं -

व्यक्ति के विकास में बाधक - व्यक्तित्व के विकास में संयुक्त परिवार बाधक बनता है, क्योंकि इसमें प्रतिभाशाली एवं मूर्ख, अकर्मण्य एवं कर्मण्य सभी के साथ समान व्यवहार होता है। परिवार के वयोवृद्ध व्यक्तियों के कठोर नियंत्रण एवं अनुशासन के कारण प्रतिभाशाली व्यक्ति भी तो

अपने विचारों को प्रकट करता है और न उसे अपनी प्रतिभा एवं योग्यता को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। फलतः उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पाता है।

(2) अकर्मण्यता - संयुक्त परिवार में अकर्मण्यता को प्रोत्साहन मिलता है। आर्थिक उपार्जन करने वाले कम उपार्जन करने वाले तथा नहीं उपार्जन करने वाले सभी को संयुक्त परिवार में समान दृष्टि से देखा जाता है। इस प्रकार उसमें आर्थिक परिश्रम करने वाले को उचित पुरस्कार नहीं मिल पाता है। इसमें लोगों में परिश्रम के लिए उत्साह नहीं रह पाता है वे आलसी तथा अकर्मण्य बन जाता है।

(3) कलह तथा द्वेष की अधिकता - संयुक्त परिवार में सदस्यों के बीच कलह तथा द्वेष पाया जाता है। सदस्यों की रुचि स्वभाव तथा प्रकृति में अन्तर पाया जाता है जिससे यदा-कदा आपसी संघर्ष होता रहता है। इससे संयुक्त परिवार कलह का केन्द्र हो जाता है। स्त्रियाँ तो संयुक्त परिवार में कलह की जड़ ही बन जाती है। वे परिवार में सभी सदस्यों के साथ उदारता नहीं दिखलाती, जिससे सम्पूर्ण परिवार में संकीर्णता फैलती है और पारिवारिक सहयोग उदारता नहीं दिखलाती, जिससे सम्पूर्ण परिवार में संकीर्णता फैलती है और पारिवारिक सहयोग

एवं स्नेह संघर्ष और कटुता में बदल जाता है।

स्त्रियों की दुर्दशा - स्त्रियों की स्थिति संयुक्त परिवार में एक दासी के समान होती है। खाना बनाने, बच्चों को जन्म देने उनकी देखभाल करने तथा अन्य सदस्यों की सेवा में ही स्त्रियों का सारा जीवन व्यतीत होता है। सास ननद के अलावे गालियाँ एवं प्रताड़ना का भी उसे शिकार बनना पड़ता है।

कर्ता की स्वेच्छाचारिता - कर्ता संयुक्त परिवार का सर्वेसर्वा होता है। उसके आदेश का पालन परिवार के सभी सदस्य करते हैं। परिवार से सम्बन्धित किसी प्रकार का कार्य हो कर्ता की इच्छा ही सर्वोपरि होती है।

निर्धनता - सदस्यों की अधिक संख्या आर्थिक व्यय अधिक बच्चे तथा वृद्धों का होना और स्त्रियों तथा द्वेष के कारण परिवार की स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती जाती है कारण कि उत्पादन कार्य आशा के अनुरूप नहीं होता और खर्च ज्यों का त्यों बना रहता है। इसलिए संयुक्त परिवार में निर्धनता पायी जाती है।

Vijay Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Fac
Dept of Sociology
Date - 22/01/2022